आचार्य तारानन्द वियोगी विरचित

तारा-चालीसा

तारा-चालीसा

तारामंडल मध्य जे रवि-द्युति विमल विकास ।
अम्ब सतत अवलम्ब ते, तिनके सृष्टि प्रकाश ॥

जल-थल-नभ के, अग्नि के, जीवक प्राणाधार ।
हे माता जगदम्बिका, प्रणमौं बारम्बार ॥

जय जगदम्ब अम्ब प्रतिपालक ।
जय माहेश्वरि रिपु - कुल - घालक ॥ 1 ॥

जय जय तारिणि भव-भय हारिणि।
जय मातेश्वरि, दुरित-निवारिणि ॥ 2॥

जय हे सब बुद्धों की माता।
सुर-नर-मुनि सब के तुम त्राता ॥ 3॥

श्रेयस - प्रेयस ज्ञान - प्रकाशिनि।
कुमति-विमति सब तिमिर-विनाशिनि ॥ 4॥

जय-जय तारा सब सुख सारा ।
भूर्भवः स्वः गुण विस्तारा ॥5॥

सकल लोक मे महिमा - शाली ।
खन लक्ष्मी ओ अनुखन काली ॥6॥

जय अक्षोभ्य-मुनि-पूजित काया ।
माया-नाशिनि ओ खुद माया ॥7॥

विद्या महा दसहि में दूजा ।
ताकी सब विधि सब क्षण पूजा ॥ 8॥

प्रत्यालीढ़ - पदा तुम घोरा ।
शव पर राजित आसन तोरा ॥ 9॥

लोचन तीन अरुण छवि नीला ।
अतिभय भय- प्रद तुम्हरी लीला ॥ 10॥

पिंगल जटाजूट सिर सोहे ।
सर्प- रूप - धृत मुनि मन मोहे ॥ 11॥

भूषण मुंड, सर्प ओ चरमा ।
को सकिहें कह मां, तुम मरमा ॥ 12॥

हस्त चतुर तुअ कठिन विशाला ।
असि, उत्पल ओ कर्त्तृ-कपाला ॥ 13॥

अट्टहास करि घोरं हसनम्।
चमकि उठे अति तीक्ष्णं दशनम् ॥ 14॥

नहि डरु, नहि डरु कह तुम माता।
पितृवन-वासिनि विहरसि त्राता ॥ 15॥

जो मां ध्याबे रूप तुम्हारा।
ताको भय नहि, कहुँ संसारा ॥ 16॥

तारा उग्र, महोग्रा रूपा ।
एकजटा तुअ विकट स्वरूपा ॥ 17॥

नील - सरस्वति, ज्ञान - प्रदाता ।
ममतामयि वत्सल तुम माता ॥ 18॥

खदिरवनी हे सब - गुण - आगर
ज्ञान, ध्यान ओ मुक्तिक सागर ॥ 19॥

बरन - बरन के रूप तिहारो।
जननि जुड़ाबिय नैन हमारो ॥ 20॥

चीनाचार नियम जे धरिहें।
सो जननी भव-पार उतरिहें ॥ 21॥

जाति-धरम के भेद न माने।
नारि-द्वेष नहि मन में आने ॥ 22॥

और न राखे कपट - वितंडा ।
जननि न रुचिहें कहुँ पाखंडा ॥ 23॥

शौच-अशौच को भेद न राखे ।
मधुर वचन सब जन सों भाखे ॥ 24॥

सब विधि सब क्षण मां को प्यारा ।
हृदय चेत, मुँह तारा-तारा ॥ 25॥

तुम्हरे सुत सब बड़ बड़ नामी।
और यहाँ मैं नर खल-कामी ॥ 26॥

ऋषि वशिष्ठ को ताड़नहारी ।
अमर, मदन को तुही उबारी ॥ 27॥

राम प्रसाद को दर्शन दीन्हा ।
बामाखेपा को सुर कीन्हा ॥ 28॥

जितने नर मां तुमने ताड़े।
उतने नभ मे ना हैं तारे ॥29॥

सब हैं धनी, गुणी सब भारी ।
एक अकेला मैं अपकारी ॥30॥

मुझमें ना कुछ गुण-गण ऐसे ।
तेरी कृपा पाउँ मैं कैसे ॥31॥

एक आस बस मां की ममता ।
और न जग में इसकी समता ॥ 32॥

पग-पग पर दुख-दुविधा भारी ।
तुम्हरे बिन मां कौन उबारी ॥ 33॥

थकित हुआ तन, मन भरमाबे ।
सखा-सहोदर काम न आबे ॥ 34॥

जब तक तुम नहि ताको अम्बा ।
एहि निर्बल का को अबलम्बा ॥ 35॥

जय जय तारिणि जय जय तारा ।
अबल-निबल के एक सहारा ॥ 36॥

जहां नजर नहि दोसर आबे।
तहां प्रकट भय राह बताबे ॥ 37॥

जो मझधार में बूड़ल नैया ।
तहँ जगतारिणि बनत खेबैया ॥ 38॥

यह भरोस मन राखूं अम्बा ।
ताकहु ताकहु हे जगदम्बा ॥ 39॥

भाखूं तो बस नाम तिहारो ।
जननी हे प्रण राखु हमारो ॥ 40॥

॥ दोहा ॥

तारा ताप विनाश करू, मेटहु सकल अन्हार ।
जग जाको त्यागे जननि ताको देहु सहार ॥

तारा तारा रे मना, जापहु आठो जाम ।
जे सुख तारा सँग लहे, से पाबहु कहँ आन ॥

जे चालीसा पाठ करे और सुने जो जाय ।
तिनके सब मनकामना पूरहु तारा माय ॥

॥ऊँ शान्तिः शान्तिः शान्तिः॥

आचार्य (डॉ.) तारानन्द वियोगी 'महिषी की तारा : इतिहास और आख्यान' एवं
'रामकथा आ मैथिली रामायण' के ख्यातिप्राप्त लेखक हैं।

सम्पर्क : बदरिकाश्रम, महिषी, सहरसा (बिहार) मो.- 09431413125, e-mail : tara.viyogi@gmail.com

प्रकाशक : नवारम्भ, 21, एम.आई.जी., हनुमान नगर, पटना-20, मो.- 09234942661, मूल्य : 11/-